RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-08
August-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

गुप्तोत्तर कालीन बिहार में राज्य और अर्थव्यवस्था : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्वेत निशा शर्मा

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Received: 22 July 2017
Accepted: 09 August 2017
Published Online: 28 August 2017

Keywords
बिहार, गुप्तकाल, अर्थव्यवस्था, वाणिज्य–व्यापार, राजस्व प्रबन्धन

ABSTRACT

बिहार भारत के पूर्वी भाग में स्थित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक राज्य है और इसकी राजधानी पटना है। बिहार नाम का प्रादुर्भाव बौद्ध सन्यासियों के ठहरने के स्थान विहार शब्द से हुआ, जिसे विहार के स्थान पर इसके अपभंश रूप बिहार से संबोधित किया जाता है। बिहार के उत्तर में नेपाल, दक्षिण में झारखण्ड, पूर्व में पश्चिम बंगाल, और पश्चिम में उत्तर प्रदेश स्थित है। यह क्षेत्र गंगा नदी तथा इसकी सहायक नदियों के उपजाऊ मैदानों में बसा है। प्राचीन काल में विशाल साम्राज्यों का गढ़ रहा यह प्रदेश, वर्तमान में अर्थव्यवस्था के आकार के आधार पर भारत के राज्य के सामान्य योगदाताओं में से एक बनकर रह गया है। भारत की पहली साम्राज्य, मौर्य साम्राज्य द्वारा नंद वंश को बदल दिया गया था। मौर्य साम्राज्य और बौद्ध धर्म का इस क्षेत्र में प्रभाव रहा है जो अब आधुनिक बिहार को अधिक वैभवशाली बना देता है। 325 ईसा पूर्व में मगध से उत्पन्न मौर्य साम्राज्य चंद्रगुप्त मौर्य ने स्थापित किया था। पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) में इसकी राजधानी थी। मौर्य सम्राट अशोक जो पाटलिपुत्र (पटना) में पैदा हुए थे, को दुनिया के इतिहास में सबसे बड़ा शासक माना जाता है। मौर्य सम्राज्य भारत की आजतक की सबसे बड़ी सम्राज्य थी। यह पश्चिम में ईरान से लेकर पूर्व में वर्मा तक और उत्तर में मध्य–एशिया से लेकर दक्षिण में श्रीलंका तक में फैला था। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद, उनके गृह प्रांतों में शासकों की एक लंबी लाइन लग गयी थी। एक को छोड़कर इन सभी के नामों के अंत में गुप्त आता था। इसलिए यह परिवार इतिहास में मगध के शासन के बाद "गुप्त" के नाम से जाना जाता है। यह तय कर लेना कि वे किसी भी तरह से शाही गुप्त के साथ जुड़े हुए थे, राजवंश उत्पन्न हुए। जैसे–कन्नोज के मौखरी, कामरूप के वर्मन, थानेश्वर के पुष्पभूति आदि। गुप्त काल के बाद भारतीय समाज में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। पांचवीं सदी ईस्वी के बाद से भारत में भूमि अनुदान ने सामंती विकास में मदद की। किसान सामंती अधिपतियों के लिए दी गई भूमि में बसे हुए थे। इनमें जिन गांवों को स्थानांतरित कर दिया गया था उन्हें 'स्थान–जन–संहिता' और 'समरिद्धा' के नाम से जाना जाता था। गुप्त काल के बाद की अवधि में व्यापार और वाणिजय में गिरावट के कारण वहां की अर्थव्यवस्था एक बंद अर्थव्यवस्था में तब्दील हो चुकी थी। सामंती समाज के विकास ने राजा की स्थिति कमजोर कर दी थी। जिस कारण राजा को सामंती प्रमुखों पर अधिक निर्भर रहना पड़ता था। सामंती प्रमुखों का वर्चस्व बढ़ने लगा था जिसके परिणामस्वरूप गांव का स्वशासन कमजोर हो गया था।

प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था संस्कृत अभिलेखों के आधार पर एक जमीन तोड़ने का प्रयत्न था। अधिकतर अर्थव्यवस्था के बारे में चर्चा, समकालीन पुस्तकों के साक्ष्य के आधार पर होती रही है। वे साक्ष्य आवश्यक नहीं कि राजशासन से किसी प्रकार सम्बन्ध रखते हों। प्राचीन अभिलेख राजशासन के रीति–नीति पर अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक रूप से ही अपने समय की स्थिति की झाँकी देते हैं। उनके आधार पर भाषा केन्द्रित अध्ययनों के द्वारा कला, इतिहास और धार्मिक प्रयोजनों से किये गये दान, यज्ञ के विषय में जो प्रामाणिक जानकारी मिलती है, इस पर गहन अध्ययन हुआ है, किन्तु अभिलेखों के आधार पर अर्थव्यस्था के अन्तर्गत भूमि तथा उससे जुड़े पक्ष कृषि व्यवस्था सिंचाई वाणिज्य–व्यापार, राजस्व प्रबन्धन आदि के बारे में व्यस्थित अध्ययन बहुत कम हुआ है। इस दृष्टि से शोधकर्त्ता ने बड़े परिश्रम और ईमानदारी के साथ प्रबल तटस्थ भाव से एक अनुछुये क्षेत्र का परिमापन किया है। सन् 240 ई० में मगध में उत्पन्न गुप्त साम्राज्य को विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, वाणिज्य, धर्म और भारतीय दर्शन के परिपेक्ष्य में भारत का स्वर्ण युग कहा गया है। इस वंश के महान राजा समुद्रगुप्त ने इस साम्राज्य को पूरे दक्षिण एशिया में स्थापित किया। इनके पुत्र चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने भारत के सारे विदेशी घुसपैठिया को हरा कर देश से बाहर किया इसीलिए इन्हें सकारी की उपादि दी गई। इन्हीं गुप्त राजाओं में से प्रमुख स्कंदगुप्त ने भारत में हूणों का आक्रमण रोका और उनको भारत से बाहर भगाया और देश की बाहरी लोगों से रक्षा की। उस समय गुप्त साम्राज्य दुनिया की सबसे बड़ी तथा शक्तिशाली राज्य व्यवस्था थी। इसका राज पश्चिम में पर्शिया या बगदाद से लेकर पूर्व में वर्मा तक तथा उत्तर में मध्य एशिया से लेकर दक्षिण में कांचीपुरम तक फैला था। इसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी। इस सम्राज्य का प्रभाव रोम, ग्रीस, अरब से लेकर दक्षिण–पूर्व एशिया तक था।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

राज्य व्यवस्था :

गुप्त कुषाणों के सामंत थे जो मौर्यों के बाद उत्तर भारत के सबसे बड़े साम्राज्य के रूप में उभरे। गुप्तकालीन प्रशासनिक पद्धति विकेंद्रीकरण की व्यवस्था पर आधारित थी। इसकी प्रमुख विशेषताओं को निम्नलिखित रूपों में देखा जो सकता है–

- गुप्त शासन प्रणाली प्राक्सामंतीय थी। राजा को रक्षाकर्त्ता तथा पालनकर्त्ता के रूप में सर्वोच्च महत्व दिया जाता था।
- राजा की सहायता के लिए अधिकारी वर्गों की नियुक्ति की जाती थी जिसमें कुमारामात्य सबसे बड़े अधिकारी थे।
- इसके अलावा, संधिविग्रह, दंडपाशिक तथा ध्रुवाधिकरण जैसे अधिकारियों का प्रमुख स्थान था। ये क्रमशः युद्ध एवं शांति के मंत्री, पुलिस अधिकारी तथा राजस्व अधिकारी की भूमिका का निर्वाह करते थे।
- प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से राज्य को भुक्तियों में, भुक्तियों को विषयों में, विषयों को विधियों में तथा विधियों को ग्रामों में बाँटा गया था।
- गुप्त राजाओं ने प्रांतीय तथा स्थानीय शासन पद्धति चलाई। ग्राम में मुखिया का पद महत्त्वपूर्ण था जो ग्राम श्रेष्ठों की सहायता से गाँव का कामकाज देखता था। स्थानीय लोगों की अनुमति के बिना जमीन की खरीद–बिक्री नहीं हो सकती थी।

वहीं नगर के प्रशासन में स्थानीय व्यावसायिकों के संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। नगरों के प्रशासनिक परिषद में मुख्य शिल्पी, मुख्य व्यापारी जैसे कई व्यक्ति शामिल थे। भूमि अनुदान के द्वारा पुरोहित वर्ग के लोगों को भी प्रशासनिक अधिकार प्रदान किये गए थे। इसके अलावा गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में सामंतों का प्रभाव भी अधिक था। राजाओं के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ रहने के बदले उन्हें अपने क्षेत्र पर अधिकार का शासन–पत्र प्रदान किया जाता था।

गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में न्याय पद्धति अत्यंत विकसित थी। इसी काल में पहली बार दीवानी और फौजदारी कानून व्यवस्था को भली–भांति पारिभाषित किया गया था। मौर्य राजाओं के विपरीत गुप्त राजाओं ने परमेश्वर, महाराजाधिराज तथा परम भट्टारक जैसी श्रेष्ठतम उपाधियाँ धारण की इससे यह पता चलता है कि वे अपने राज्यों में छोटे–छोटे राजाओं के ऊपर शासन करते थे जबकि मौर्य प्रशासन में प्रत्यक्ष शासन पर अधिक बल दिया जाता था। गुप्त शासकों की तुलना में मौर्य शासन प्रणाली अधिक केन्द्रीकृत थी। केन्द्रीकरण पर बल दिये जाने के कारण मौर्य शासन प्रणाली में अपेक्षाकृत अधिक अधिकारीवर्ग की आवश्यकता पड़ती थी। गुप्तों की स्थानीय प्रशासन मौर्यों की तुलना में अधिक विकसित थी। किन्तु मौर्य साम्राज्य की भांति गुप्त साम्राज्य बड़े पैमाने पर आर्थिक कार्यकलापों में संलग्न भी नहीं था। स्पष्ट है कि भारत के इन दोनों साम्राज्यों के प्रशासनिक स्वरूप में पर्याप्त भिन्नताएँ विद्यमान थीं।

अर्थव्यवस्था :

आर्थिक जीवन किसी भी समाज की सर्वतोमुखी अभिवृद्धि का आधार होता है। पुरुषार्थों में 'अर्थ' की गणना भी इस तथ्य की ओर संकेत करती है। दुर्भाग्यवश भारती चिन्तन परम्परा को आध्यात्मिक या पारलौकिक करार देते हुए आर्थिक विमर्श के लिए अनुपादेय घोषित कर दिया जाता है। इस तरह का भ्रम आधारहीन है और तथ्यों की अनदेखी कर प्रचलित हुआ है। भारतीय समाज और इसकी सांस्कृतिक प्रथाएँ तथा परम्पराओं की जड़ें गहरी है और उनकमें निरन्तरता है। पाश्चात्य विचारों के प्रभुत्व तथा औपनिवेशिक मानसिकता के कारण ये आवरण से आच्छादित हो गयी हैं और उन्हें सुग्राह्य ढंग से उपस्थित करना आज की एक महत्त्वपूर्ण बौद्धिक चुनौती है। ऐसा करना मात्र आत्मश्लाघा न होकर भारतीय यथार्थ की दृष्टि से पर्यालोचन और आवश्यक परिष्कार का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस प्रकार का प्रयास ज्ञान के अनेक क्षेत्रों में आरंभ हुआ है। देशज ज्ञान परम्परा का पुनराविष्कार और अनुसंधान देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक सिद्ध हो रहा है। हर्ष शासन की अवधि के दौरान साहित्यिक और शिलालेखीय साक्ष्यों से पता चलता है कि राज्य कृषि, व्यापार और अर्थव्यवस्था में किस प्रकार उन्नत था। साहित्यकार अभिधन रत्नमाला ने उल्लेखित किया है कि मिट्टी को विभिन्न प्रकारों जैसे उपजाऊ, बंजर, रेगिस्तान, उत्कृष्ट आदि के रूप में वर्गीकृत किया गया था। उन्होंने यह भी उल्लेखित किया है कि विभिन्न प्रकार के फसलों के लिए विभिन्न मैदानों का चयन किया जाता था। उद्योग के क्षेत्र में कपड़ा सबसे पुराने उद्योगों में से एक था। समकालीन साहित्य में बुनकर, रंगरेज, दर्जी आदि के पेशे का वर्णन किया गया है। इस अवधि के दौरान धातु का काम भी बेहद लोकप्रिय था। धातु उद्योग के कुछ केन्द्र प्रसिद्ध थे। सौराष्ट्र अपने घंटी (बेल) धातु उद्योग के लिए प्रसिद्ध था, जबकि बंगा (बंगाल) अपने टिन उद्योग के लिए जाना जाता था। गुप्त काल के बाद दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार के प्रवाह का उल्लेख अरब, चीन और भारतीय स्त्रोतों में किया है। भारत, चंदन की लकड़ी, मोती, कपूर, कपास, धातु, कीमती और अर्द्ध कीमती पत्थरों का निर्यात करता था। आयातित वस्तुओं में किराए के घोड़े शामिल थे। घोड़ों को मध्य और पश्चिमी एशिया से आयात किया जाता था। गुप्त काल में श्राइन या निकाय महत्वपूर्ण होते थे।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

500 ईसापूर्व : महाजनपदों द्वारा चाँदी के पंच किए हुए सिक्के (Punch & marked coins) ढाले जाते थे। इन सिक्कों ने सघन व्यापार तथा नगरीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1000 ई० : विश्व अर्थव्यवस्था में भारतीय अर्थव्यवस्था का हिंसा 52.9 प्रतिशत था जो एक कीर्तिमान है। विश्व अर्थव्यवस्था में भारतीय अर्थव्यवस्था का हिंसा 33 प्रतिशत था, जो संसार में सबसे अधिक हिस्सा है।

सारांश :

भारत एक समय में सोने की चिड़िया कहलाता था। आर्थिक इतिहासकार एंगस मैडिसन के अनुसार पहली सदी के लेकर दसवीं सदी तक भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। पहली सदी में भारत का सकल घरेलू उत्पाद विश्व के कुल जीडीपी का 32.9 प्रति था व सन् 1000 में यह 28.9 प्रतिशत था या और सन् 1700 में 24.4 प्रतिशत था। ब्रिटिश काल में भारत की अर्थव्यवस्था का जमकर शोषण व दोहन हुआ जिसके फलस्वरूप 1947 में आजादी के समय में भारतीय अर्थव्यवस्था अपने सुनहरी इतिहास का एक खंडहर मात्र रह गई। ऐतिहासिक काल से गुप्तकाल तक गुप्त साम्राज्य एक प्राचीन भारतीय साम्राज्य था जो 3वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 543 ईस्वी तक के मध्य में विद्यमान था। इसके अंचल में लगभग 319 से 543 ई० तक इसने भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्से को शामिल किया। कुछ इतिहासकारों द्वारा इस अवधि को भारत का स्वर्णिम काल माना जाता है। साम्राज्य के शासक राजवंश की स्थापना राजा श्री गुप्त ने की थी। राजवंश के सबसे उल्लेखनीय शासकों में चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय उर्फ विक्रमादित्य थे। पाँचवी शताब्दी के संस्कृत कवि कालिदास ने गुप्तकाल के बारे में इक्कीस राज्यों पर विजय प्राप्त करने का श्रेय दिया है, जिसमें भारत के भीतर और बाहर, पारसीक के राज्य हूण, कम्बोज, पश्चिम में स्थित जनजातियाँ और पूर्व में ऑक्सस धाटियाँ, किन्नर, किरात आदि शामिल हैं। गुप्तकाल तक भारत में भूमि पर राजा के मूलभूत पूर्वास्वामित्व का सिद्धांत लोकप्रिय हो चुका था। मनु ने तो राजा को समस्त भूमि का सर्वोच्च स्वामी माना है। गौतम ने ब्राह्मणों के अतिरिक्त सबको राजा की सम्पत्ति बताया है। मेगास्थनीज के अनुसार भारत में किसान राजा को भूमिकर और उपज का चौथाई हिस्सा देते थे क्योंकि यहाँ समस्त भूमि राजा की सम्पत्ति मानी जाती थी।

संदर्भ–सूची

1. ठाकुर प्रसाद वर्मा (2013), बी.एच. छाबड़ा और जी.एस.गई। (मेक) कॉर्पस शिलालेख इंडिकम Um, Vol (संशोधित) प्रारंभिक गुप्तों के शिलालेख, नई दिल्ली, 2013.
2. कमला देवी, (2016), के बीच पश्चिम बंगाल में खोजी गई शिलालेख पर ए क नोटश, प्रना सा 1111 सं, 1, 1992, पीपी, 161–162.
3. राजकुमार तिवारी (2017), कॉपर–प्लेट्स ऑफ सिल्हेट, अवस, स (7वां–11वां सेंट– ADJ सिलहेट– 2014.
4. जी.वी. आचार्य (2016) कलकत्ता – ।सरमा, डी। (EDJ, कमारिप्पा। एस. इसान वली, गौहाटी.
5. पूनम वाला (2016), सेलेक्ट शिलालेख बोम भारतीय इतिहास और नागरिकता 11 खंड 1 पर (दूसरा संस्करण), कलकत्ता, 2016 (पुनर्मुद्रण, दिल्ली, 19), 6), खंड 2, दिल्ली, 2016.
6. आर.एस. शर्मा (2017) आईसनिदिर प्रिसालगा, कलकत्ता.
7. के.एम. श्रीमाली (2018), महाजिरो के बाद में गुप्त, पुय पाब्लिश और यासो वमवान, कन्नोज, दिल्ली.
8. हरिपद चक्रवर्ती (2018) लगभग पांचवीं–आठवीं शताब्दी ए डी। दिल्ली.
9. द्विजेन्द्र नाथ झा (2017) धर्मसाल्टा में बौधायन धर्मसिल्ट्र : द लॉ कोड्स आ पस्तम्बा, गौतम, बौधियाना, और दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास.
10. हरिषद चक्रवर्ती (2018) के लसारवसवा, एड डी एम भट्टाचार्यद्वारा कलकत्ता : संस्कृत साहित्य परिषद.
11. सरोज दत्त (2018), कलकत्ता, एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल.
12. जी.वी. आचार्य (2016), का दयाभिगा : द हिंदू लॉ ऑफ इनहेरिटेंस इन वें गा एड ट्र, इंट्रो एल रोचर, न्यूयॉर्क ओयुपी 2017 द्वारा एनोटेंशन.
13. परमानन्द गुप्त (2016) एड.पी. ताराभूषण, कलकत्ता, रॉयल एशियाटिक द्वारा बंगाल की सोसायटी.
14. राजकुमार तिवारी (2017), ईडी जे.एल. शास्त्री, दिल्ली द्वारा : मोतीलाल बनारसीदास.
15. वी.वी. मिराशी (2016) ये एड ट्र। और आर. लैरीवियर, फिलाडेल्फिया द्वारा टिप्पणी, विभाग दक्षिण एशिया क्षेत्रीय अध्ययन, पेसिल्वेनिया विश्वविद्यालय.
16. भावदेवताभ का प्रयागशिटाप्रकार 1 जज जी.सी. वेदांततीर्थ इंट्री द्वारा एन. जी. मजूमदार, राजशाही : वीरेंद्र रिसर्च सोसाइटी.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved